<u>रम गई मां मेरे रोम रोम में</u>

रम गई मां मेरे रोम रोम में
मेरी सांसों में अम्बे के नाम की माला बहती
इसी लिए तो जिहवा मेरी हर समय यह कहती

जहां भी जाऊं जिधर भी देखूं
अष्ट भुजी मां दिखे
यह रंग ऐसा जिसके आगे और सभी रंग फ़ीके
आंधी आई तूफां आया पर न भरोसा डोला
नाम दिवाना भाव से ध्यानू यही झूम के बोला

दुख सुख भगतों इस जीवन में
एक बार लागे मन में मां की जगी है ज्योती
इधर उधर कयों भागे
सपनें में जब वैष्णों मां ने अर्ध का रुप दिखाया
मस्ती में ही बावर हो कर स्रीधर ने फरमाया

मन चाहे अब मां के दर में सेवक बन जाऊं
मां के भगतों की सेवा में सारी उमर बिताऊं
चण्ड मुंड की चिंता हरणी नयन बील समाई
मस्ताना हो भाई दास ने येही रट लगाई

मेरी सांसों में अम्बे के नाम की माला बहती
इसी लिए तो जिव्हा मेरी हर समय ये कहती
रम गई मां मेरे रोम रोम में ॥